

Para 28

Sipara 28 of 30 · 137 Ayahs · Translation: Hindi

Al-Mujaadila

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَدِّلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى
اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۖ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ ۝۱ بَصِيرٌ

ऐ रसूल जो औरत (खुला) तुमसे अपने शौहर (उस) के बारे में तुमसे झगड़ती और खुदा से गिले शिकवे करती है खुदा ने उसकी बात सुन ली और खुदा तुम दोनों की गुप्तगू सुन रहा है बेशक खुदा बड़ा सुनने वाला देखने वाला है

2

الَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُمْ نِسَائِهِمْ مَا هُنَّ أُمَّهَاتُهُمْ ۖ إِنَّ أُمَّهَاتُهُمْ إِلَّا آلِي وَلَدْنَهُمْ ۝۲
وَأَنَّهُمْ لَيَقُولُنَّ مُنْكَرٌ ۝۳ مِنَ الْقَوْلِ وَزُورٌ ۝۴ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوءٌ غَفُورٌ ۝۵

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों के साथ ज़हार करते हैं अपनी बीवी को माँ कहते हैं वह कुछ उनकी माँ नहीं (हो जातीं) उनकी माँ तो बस वही हैं जो उनको जनती हैं और वह बेशक एक नामाकूल और झूठी बात कहते हैं और खुदा बेशक माफ करने वाला और बड़ा बख्शने वाला है

3

وَالَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا ۖ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۝۶ مِنْ قَبْلِ أَنْ
يَتِمَّاسًا ۝۷ ذَلِكُمْ تُوَعُّظُونَ بِهِ ۝۸ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝۹

और जो लोग अपनी बीवियों से ज़हार कर बैठे फिर अपनी बात वापस लें तो दोनों के हमबिस्तर होने से पहले (कफ़ारे में) एक गुलाम का आज़ाद करना (ज़रूरी) है उसकी तुमको नसीहत की जाती है और तुम जो कुछ भी करते हो (खुदा) उससे आगाह है

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتِمَّاسَا ۖ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ
فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ
وَاللَّكُفْرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ

फिर जिसको गुलाम न मिले तो दोनों की मुक़ाबत के क़बल दो महीने के पै दर पै रोज़े रखें और जिसको इसकी भी कुदरत न हो साठ मोहताजों को खाना खिलाना फर्ज़ है ये (हुक़्म इसलिए है) ताकि तुम खुदा और उसके रसूल की (पैरवी) तसदीक़ करो और ये खुदा की मुकर्रर हदें हैं और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۙ كُبِتُوا ۚ كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَقَدْ أُنْزِلْنَا
ءَايَاتٍ ۚ بَيِّنَاتٍ ۚ وَاللَّكُفْرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ

बेशक जो लोग खुदा की और उसके रसूल की मुखालेफ़त करते हैं वह (उसी तरह) ज़लील किए जाएँगे जिस तरह उनके पहले लोग किए जा चुके हैं और हम तो अपनी साफ़ और सरीही आयतें नाज़िल कर चुके और काफ़िरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

जिस दिन खुदा उन सबको दोबारा उठाएगा तो उनके आमाल से उनको आगाह कर देगा ये लोग (अगरचे) उनको भूल गये हैं मगर खुदा ने उनको याद रखा है और खुदा तो हर चीज़ का गवाह है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا
هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْثَرُ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ
مَا كَانُوا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

क्या तुमको मालूम नहीं कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) खुदा जानता है जब तीन (आदमियों) का खुफिया मशवेरा होता है तो वह (खुद) उनका ज़रूर चौथा है और जब पाँच का मशवेरा होता है तो वह उनका छठा है और उससे कम हो या ज्यादा और चाहे जहाँ कहीं हो वह उनके साथ ज़रूर होता है फिर जो कुछ वह (दुनिया में) करते रहे क़यामत के दिन उनको उससे आगाह कर देगा बेशक खुदा हर चीज़ से खूब वाकिफ़ है

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا؟ عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا؟ عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْإِثْمِ
وَالْعُدْوَنِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ
فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ؟ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا؟ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनको सरगोशियाँ करने से मना किया गया गरज़ जिस काम की उनको मुमानिअत की गयी थी उसी को फिर करते हैं और (लुत्फ़ तो ये है कि) गुनाह और (बेजा) ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियाँ करते हैं और जब तुम्हारे पास आते हैं तो जिन लफज़ों से खुदा ने भी तुम को सलाम नहीं किया उन लफज़ों से सलाम करते हैं और अपने जी में कहते हैं कि (अगर ये वाकई पैग़म्बर हैं तो) जो कुछ हम कहते हैं खुदा हमें उसकी सज़ा क्यों नहीं देता (ऐ रसूल) उनको दोज़ख ही (की सज़ा) काफी है जिसमें ये दाखिल होंगे तो वह (क्या) बुरी जगह है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا؟ إِذَا تَنَجَّيْتُمْ فَلَا تَتَنَجَّوْا؟ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَنِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ
وَتَتَنَجَّوْا؟ بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى؟ وَاتَّقُوا؟ اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

ऐ ईमानदारों जब तुम आपस में सरगोशी करो तो गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशी न करो बल्कि नेकीकारी और परहेज़गारी की सरगोशी करो और खुदा से डरते रहो जिसके सामने (एक दिन) जमा किए जाओगे

إِنَّمَا النَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ ءَامَنُوا؟ وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ؟ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

(बरी बातों की) सरगोशी तो बस एक शैतानी काम है (और इसलिए करते हैं) ताकि ईमानदारों को उससे रंज पहुँचे हालाँकि खुदा की तरफ से आज्ञादी दिए बगैर सरगोशी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती और मोमिनीन को तो खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا؟ إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا؟ فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا؟ يَفْسَحِ اللَّهُ
لَكُمْ؟ وَإِذَا قِيلَ أَنْشُرُوا؟ فَأَنْشُرُوا؟ يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا؟ مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا؟
الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ؟ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ؟

ऐ ईमानदारों जब तुमसे कहा जाए कि मजलिस में जगह कुशादा करो वह तो कुशादा कर दिया करो खुदा तुमको कुशादगी अता करेगा और जब तुमसे कहा जाए कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो जो लोग तुमसे ईमानदार हैं और जिनको इल्म अता हुआ है खुदा उनके दर्जे बुलन्द करेगा और खुदा तुम्हारे सब कामों से बेखबर है

12

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِذَا نُجِيتُمُ الرُّسُولَ فَاقْدَمُوا ۚ بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰكُمُ صَدَقَةٌ ۚ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ

ऐ ईमानदारों जब पैगम्बर से कोई बात कान में कहनी चाहो तो कुछ खैरात अपनी सरगोशी से पहले दे दिया करो यही तुम्हारे वास्ते बेहतर और पाकीज़ा बात है पस अगर तुमको इसका मुक़दूर न हो तो बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

13

ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا ۚ بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰكُمُ صَدَقْتُمْ ۚ ۚ فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا ۚ وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ وَءَاتُوا ۚ الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا ۚ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ

(मुसलमानों) क्या तुम इस बात से डर गए कि (रसूल के) कान में बात कहने से पहले खैरात कर लो तो जब तुम लोग (इतना सा काम) न कर सके और खुदा ने तुम्हें माफ़ कर दिया तो पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और ज़कात देते रहो और खुदा उसके रसूल की इताअत करो और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे बाख़बर है

14

ۚ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا ۚ قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَّا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

क्या तुमने उन लोगों की हालत पर ग़ौर नहीं किया जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर खुदा ने ग़ज़ब ढाया है तो अब वह न तुम मे हैं और न उनमें ये लोग जानबूझ कर झूठी बातों पर क़समें खाते हैं और वह जानते हैं

15

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

खुदा ने उनके लिए सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है इसमें शक़ नहीं कि ये लोग जो कुछ करते हैं बहुत ही बुरा है

16

أَتَّخَذُوا ۚ أَيْمَنَهُمْ جُنَّةً ۚ فَصَدُّوا ۚ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۚ

उन लोगों ने अपनी क़समों को सिपर बना लिया है और (लोगों को) खुदा की राह से रोक दिया तो उनके लिए रूसवा करने वाला अज़ाब है

17

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ أَوْ لَيْسَ لَكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

खुदा सामने हरगिज़ न उनके माल ही कुछ काम आएँगे और न उनकी औलाद ही काम आएगी यही लोग जहन्नुमी हैं कि हमेशा उसमें रहेंगे

18

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۖ فَيَحْلِفُونَ لَهُ ۖ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ

जिस दिन खुदा उन सबको दोबार उठा खड़ा करेगा तो ये लोग जिस तरह तुम्हारे सामने कसमें खाते हैं उसी तरह उसके सामने भी कसमें खाएँगे और ख्याल करते हैं कि वह राहे सवाब पर हैं आगाह रहो ये लोग यकीनन झूठे हैं

19

أَسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۖ أَوْ لَيْسَ لَكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۖ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ

शैतान ने इन पर क़ाबू पा लिया है और खुदा की याद उनसे भुला दी है ये लोग शैतान के गिरोह है सुन रखो कि शैतान का गिरोह घाटा उठाने वाला है

20

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ أَوْ لَيْسَ لَكَ فِي الْأَذَلِّينَ

जो लोग खुदा और उसके रसूल से मुखालेफ़त करते हैं वह सब ज़लील लोगों में हैं

21

كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا ۖ وَرُسُلِي ۖ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۖ

खुदा ने हुक्म नातिक दे दिया है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ज़रूर ग़ालिब रहेंगे बेशक खुदा बड़ा ज़बरदस्त ग़ालिब है

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَلَوْ
 كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أَوَلَيْكَ كِتَابٌ فِي قُلُوبِهِمْ
 الْإِيمَانُ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ ۚ مِنْهُ ۚ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
 فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا ۚ عَنْهُ ۚ أَوَلَيْكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ
 هُمُ الْمُفْلِحُونَ

जो लोग खुदा और रोज़े आखेरत पर ईमान रखते हैं तुम उनको खुदा और उसके रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए न देखोगे अगरचे वह उनके बाप या बेटे या भाई या खानदान ही के लोग (क्यों न हों) यही वह लोग हैं जिनके दिलों में खुदा ने ईमान को साबित कर दिया है और खास अपने नूर से उनकी ताईद की है और उनको (बेहिश्त में) उन (हरे भरे) बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरे जारी है (और वह) हमेशा उसमें रहेंगे खुदा उनसे राज़ी और वह खुदा से खुश यही खुदा का गिरोह है सुन रखो कि खुदा के गिरोह के लोग दिली मुरादें पाएँगे

Al-Hashr

[1]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
 الْحَكِيمُ

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं और वही ग़ालिब हिकमत वाला है

[2]

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا
 ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا ۚ ۚ وَظَنُّوا ۚ أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ
 حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا ۚ ۚ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ ۚ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِ
 الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا ۚ يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ

वही तो है जिसने कुफ़ार अहले किताब (बनी नुजैर) को पहले हश्र (जिलाए वतन) में उनके घरों से निकाल बाहर किया (मुसलमानों) तुमको तो ये वहम भी न था कि वह निकल जाएँगे और वह लोग ये समझे हुये थे कि उनके किले उनको खुदा (के अज़ाब) से बचा लेंगे मगर जहाँ से उनको ख्याल भी न था खुदा ने उनको आ लिया और उनके दिलों में (मुसलमानों) को रौब डाल दिया कि वह लोग खुद अपने हाथों से और मोमिनीन के हाथों से अपने घरों को उजाड़ने लगे तो ऐ आँख वालों इबरत हासिल करो

3

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۚ وَلَهُمْ فِي آخِرَةِ عَذَابٌ
النَّارِ

और खुदा ने उनकी किसमत में ज़िला बतनी न लिखा होता तो उन पर दुनिया में भी (दूसरी तरह) अज़ाब करता और आखिरत में तो उन पर जहन्नुम का अज़ाब है ही

4

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا ۚ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

ये इसलिए कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल की मुखालेफ़त की और जिसने खुदा की मुखालेफ़त की तो (याद रहे कि) खुदा बड़ा सख्त अज़ाब देने वाला है

5

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ

(मोमिनो) खज़ूर का दरख़्त जो तुमने काट डाला या जूँ का तँ से उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो खुदा ही के हुक्म से और मतलब ये था कि वह नाफरमानों को रूसवा करे

6

وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۚ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ ۚ وَلَا رِكَابٍ ۚ وَلَكِنَّ
اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ ۚ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

(तो) जो माल खुदा ने अपने रसूल को उन लोगों से बे लड़े दिलवा दिया उसमें तुम्हार हक़ नहीं क्योंकि तुमने उसके लिए कुछ दौड़ धूप तो की ही नहीं, न घोड़ों से न ऊँटों से, मगर खुदा अपने पैग़म्बरों को जिस पर चाहता है ग़लबा अता फरमाता है और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

7

مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۚ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ
وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَىٰ لَا يَكُونَ دُولَةً ۚ بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ

الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

तो जो माल खुदा ने अपने रसूल को देहात वालों से बे लड़े दिलवाया है वह खास खुदा और उसके रसूल और (रसूल के) क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजों और परदेसियों का है ताकि जो लोग तुममें से दौलतमन्द हैं हिर फिर कर दौलत उन्हीं में न रहे, हाँ जो तुमको रसूल दें दें वह ले लिया करो और जिससे मना करें उससे बाज़ रहो और खुदा से डरते रहो बेशक खुदा सख्त अज़ाब देने वाला है

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهْجَرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا ۖ مِنْ دِيَرِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا ۖ مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانًا ۖ وَيَنْصَرُّونَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ أَوْ لَكَ هُمُ الصَّادِقُونَ

(इस माल में) उन मुफलिस मुहाजिरों का हिस्सा भी है जो अपने घरों से और मालों से निकाले (और अलग किए) गए (और) खुदा के फ़ज़ल व खुशनूदी के तलबगार हैं और खुदा की और उसके रसूल की मदद करते हैं यही लोग सच्चे ईमानदार हैं और (उनका भी हिस्सा है)

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي
صُدُورِهِمْ حَاجَةً ۖ مِمَّا أُوتُوا ۖ وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۖ ۖ
وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ ۖ فَأُوْلَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

जो लोग मोहाजेरीन से पहले (हिजरत के) घर (मदीना) में मुक़ीम हैं और ईमान में (मुसतक़िल) रहे और जो लोग हिजरत करके उनके पास आए उनसे मोहब्बत करते हैं और जो कुछ उनको मिला उसके लिए अपने दिलों में कुछ ग़रज़ नहीं पाते और अगरचे अपने ऊपर तंगी ही क्यों न हो दूसरों को अपने नफ्स पर तरजीह देते हैं और जो शरूष अपने नफ्स की हिस् से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग अपनी दिली मुरादे पाएँगे

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ ۖ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ
وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا ۖ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ ۖ رَحِيمٌ

और उनका भी हिस्सा है और जो लोग उन (मोहाजेरीन) के बाद आए (और) दुआ करते हैं कि परवरदिगार हमारी और उन लोगों की जो हमसे पहले ईमान ला चुके मग़फ़ेरत कर और मोमिनों की तरफ से हमारे दिलों में किसी तरह का कीना न आने दे परवरदिगार बेशक तू बड़ा शफीक़ निहायत रहम वाला है

﴿ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا ﴾ يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا ﴾ ۝ وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

क्या तुमने उन मुनाफ़िकों की हालत पर नज़र नहीं की जो अपने काफ़िर भाइयों अहले किताब से कहा करते हैं कि अगर कहीं तुम (घरों से) निकाले गए तो यक़ीन जानों कि हम भी तुम्हारे साथ (ज़रूर) निकल खड़े होंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी की इताअत न करेंगे और अगर तुमसे लड़ाई होगी तो ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, मगर खुदा बयान किए देता है कि ये लोग यक़ीनन झूठे हैं

لَئِنْ أُخْرِجُوا ﴿ لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا ﴾ لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُولِيَنَّ الْأَدْبَرَ ثُمَّ لَا يُصَرُّونَ

अगर कुफ़ार निकाले भी जाएँ तो ये मुनाफ़ेकीन उनके साथ न निकलेंगे और अगर उनसे लड़ाई हुई तो उनकी मदद भी न करेंगे और यक़ीनन करेंगे भी तो पीठ फेर कर भाग जाएँगे

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً ﴿ فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ﴿ لَا يَفْقَهُونَ

फिर उनको कहीं से कुमक भी न मिलेगी (मोमिनों) तुम्हारी हैबत उनके दिलों में खुदा से भी बढ़कर है, ये इस वजह से कि ये लोग समझ नहीं रखते

لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرَىٰ ﴿ مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ ﴾ ۝ بِأَسْهُمٍ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ﴿ ۝ تَحْسِبُهُمْ جَمِيعًا ۝ وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ﴿ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ﴿ لَا يَعْقِلُونَ

ये सब के सब मिलकर भी तुमसे नहीं लड़ सकते, मगर हर तरफ से महफूज़ बस्तियों में या (शहर पनाह की) दीवारों की आड़ में इनकी आपस में तो बड़ी धाक है कि तुम ख्याल करोगे कि सब के सब (एक जान) हैं मगर उनके दिल एक दूसरे से फटे हुए हैं ये इस वजह से कि ये लोग बेअकल हैं

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ﴿ ۝ ذَاقُوا ۝ وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿

उनका हाल उन लोगों का सा है जो उनसे कुछ ही पेशतर अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख चुके हैं और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

16

كَمَثَلَ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكَ إِنِّي أَخَافُ
اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ

(मुनाफ़िकों) की मिसाल शैतान की सी है कि इन्सान से कहता रहा कि काफ़िर हो जाओ, फिर जब वह काफ़िर हो गया तो कहने लगा मैं तुमसे बेज़ार हूँ मैं सारे जहाँ के परवरदिगार से डरता हूँ

17

فَكَانَ عِقَابُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ

तो दोनों का नतीजा ये हुआ कि दोनों दोज़ख में (डाले) जाएँगे और उसमें हमेशा रहेंगे और यही तमाम ज़ालिमों की सज़ा है

18

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ
إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ

ऐ ईमानदारों खुदा से डरो, और हर शख्स को ग़ौर करना चाहिए कि कल क़यामत के वास्ते उसने पहले से क्या भेजा है और खुदा ही से डरते रहो बेशक जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे बाख़बर है

19

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ

और उन लोगों के जैसे न हो जाओ जो खुदा को भुला बैठे तो खुदा ने उन्हें ऐसा कर दिया कि वह अपने आपको भूल गए यही लोग तो बद किरदार हैं

20

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ

जहन्नुमी और जन्नती किसी तरह बराबर नहीं हो सकते जन्नती लोग ही तो कामयाबी हासिल करने वाले हैं

21

لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْءَانَ عَلَىٰ جَبَلٍ ۚ لَّرَأَيْنَاهُ خُشْعًا ۖ مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ
وَتِلْكَ الْأَمْثَلُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ

अगर हम इस कुरान को किसी पहाड़ पर (भी) नाज़िल करते तो तुम उसको देखते कि खुदा के डर से झुका और फटा जाता है ये मिसालें हम लोगों (के समझाने) के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर करें

22

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

वही खुदा है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला वही बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

23

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ ۚ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ

वही वह खुदा है जिसके सिवा कोई क़ाबिले इबादत नहीं (हकीक़ी) बादशाह, पाक ज़ात (हर ऐब से) बरी अमन देने वाला निगेहबान, ग़ालिब ज़बरदस्त बड़ाई वाला ये लोग जिसको (उसका) शरीक ठहराते हैं उससे पाक है

24

هُوَ اللَّهُ الْخَلِيقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ ۚ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۚ يُسَبِّحُ لَهُ ۚ مَا فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

वही खुदा (तमाम चीज़ों का ख़ालिक) मुजिद सूरतों का बनाने वाला उसी के अच्छे अच्छे नाम हैं जो चीज़े सारे आसमान व ज़मीन में हैं सब उसी की तसबीह करती हैं, और वही ग़ालिब हिकमत वाला है

Al-Mumtahana

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَّخِذُوا ۚ عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ
تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا ۚ بِمَا جَاءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ
وَإِيَّاكُمْ ۚ أَنْ تُوْمِنُوا ۚ بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا ۚ فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ
مَرْضَاتِي ۚ تُسِرُّونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَأَنَا ۚ أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۚ وَمَنْ
يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ

ऐ ईमानदारों अगर तुम मेरी राह में जेहाद करने और मेरी खुशनूदी की तमन्ना में (घर से) निकलते हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम उनके पास दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो और जो दीन हक़ तुम्हारे पास आया है उससे वह लोग इनकार करते हैं वह लोग रसूल को और तुमको इस बात पर (घर से) निकालते हैं कि तुम अपने परवरदिगार खुदा पर ईमान ले आए हो (और) तुम हो कि उनके पास छुप छुप के दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो हालाँकि तुम कुछ भी छुपा कर या बिल एलान करते हो मैं उससे खूब वाकिफ़ हूँ और तुममें से जो शरूष ऐसा करे तो वह सीधी राह से यक़ीनन भटक गया

2

إِنْ يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا^۱ لَكُمْ أَعْدَاءً^۲ وَيَبْسُطُوا^۳ إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم بِالسُّوءِ
وَوَدُّوا^۴ لَوْ تَكْفُرُونَ

अगर ये लोग तुम पर क्राबू पा जाएँ तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और ईजा के लिए तुम्हारी तरफ अपने हाथ भी बढ़ाएँगे और अपनी ज़बाने भी और चाहते हैं कि काश तुम भी काफिर हो जाओ

3

لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ^۱ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ^۲ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ^۳

क़यामत के दिन न तुम्हारे रिश्ते नाते ही कुछ काम आएँगे न तुम्हारी औलाद (उस दिन) तो वही फैसला कर देगा और जो कुछ भी तुम करते हो खुदा उसे देख रहा है

4

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ^۱ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ^۲ إِذْ قَالُوا^۳ لِقَوْمِهِمْ إِنَّا
بِرَّءُوا^۴ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ
وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا^۵ بِاللَّهِ وَحْدَهُ^۶ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا
أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ^۷ ۱ ۲ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ

(मुसलमानों) तुम्हारे वास्ते तो इबराहीम और उनके साथियों (के क़ौल व फेल का अच्छा नमूना मौजूद है) कि जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हम तुमसे और उन (बुतों) से जिन्हें तुम खुदा के सिवा पूजते हो बेज़ार हैं हम तो तुम्हारे (दीन के) मुनकिर हैं और जब तक तुम यकता खुदा पर ईमान न लाओ हमारे तुम्हारे दरमियान खुल्लम खुल्ला अदावत व दुश्मनी कायम हो गयी मगर (हाँ) इबराहीम ने अपने (मुँह बोले) बाप से ये (अलबत्ता) कहा कि मैं आपके लिए मग़फ़िरत की दुआ ज़रूर करूँगा और खुदा के सामने तो मैं आपके वास्ते कुछ एख्तेयार नहीं रखता ऐ हमारे पालने वाले (खुदा) हमने तुझी पर भरोसा कर लिया है और तेरी ही तरफ हम रूजू करते हैं

5

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً^۱ لِلَّذِينَ كَفَرُوا^۲ وَأَغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا^۳ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

और तेरी तरफ हमें लौट कर जाना है ऐ हमारे पालने वाले तू हम लोगों को काफ़िरों की आजमाइश (का ज़रिया) न करार दे और परवरदिगार तू हमें बख़्श दे बेशक तू ग़ालिब (और) हिकमत वाला है

6

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ ۖ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا ۖ اللَّهَ وَالْيَوْمَ ٱلْآخِرَ ۖ وَمَن
يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ ٱلْغَنِيُّ ٱلْحَمِيدُ

(मुसलमानों) उन लोगों के (अफ़आल) का तुम्हारे वास्ते जो खुदा और रोज़े आख़ेरत की उम्मीद रखता हो अच्छा नमूना है और जो (इससे) मुँह मोड़े तो खुदा भी यकीनन बेपरवा (और) सज़ावारे हम्द है

7

ۚ عَسَى ٱللَّهُ أَن يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ ٱلَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۚ ۚ وَٱللَّهُ قَدِيرٌ ۚ ۚ
وَٱللَّهُ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

करीब है कि खुदा तुम्हारे और उनमें से तुम्हारे दुश्मनों के दरमियान दोस्ती पैदा कर दे और खुदा तो क़ादिर है और खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

8

لَّا يَنْهَكُمُ ٱللَّهُ عَنِ ٱلَّذِينَ لَمْ يُقْتَلُواْ فِي ٱلدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُواْكُم مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ
وَتُقْسِطُواْ ۚ إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُقْسِطِينَ

जो लोग तुमसे तुम्हारे दीन के बारे में नहीं लड़े भिड़े और न तुम्हें घरों से निकाले उन लोगों के साथ एहसान करने और उनके साथ इन्साफ़ से पेश आने से खुदा तुम्हें मना नहीं करता बेशक खुदा इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है

9

إِنَّمَا يَنْهَكُمُ ٱللَّهُ عَنِ ٱلَّذِينَ قَتَلُواْكُمْ فِي ٱلدِّينِ وَأَخْرَجُواْكُمْ مِّن دِيَارِكُمْ وَظَهَرُواْ ۚ
عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ

खुदा तो बस उन लोगों के साथ दोस्ती करने से मना करता है जिन्होंने तुमसे दीन के बारे में लड़ाई की और तुमको तुम्हारे घरों से निकाल बाहर किया, और तुम्हारे निकालने में (औरों की) मदद की और जो लोग ऐसों से दोस्ती करेंगे वह लोग ज़ालिम हैं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِذَا جَاءَكُمْ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَجِرَاتٍ ۖ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۚ أَلَا اللَّهُ أَعْلَمُ
بِإِيمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ ۖ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۚ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ
وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۚ وَعَاطُوهُنَّ مَّا أَنفَقُوا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا
ءَاتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا ۚ بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسَلُّوا ۚ مَّا أَنفَقْتُمْ
وَلَيْسَ لَكُمُ حُكْمُ اللَّهِ ۚ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

ऐ ईमानदारों जब तुम्हारे पास ईमानदार औरतें वतन छोड़ कर आएँ तो तुम उनको आजमा लो, खुदा तो उनके ईमान से वाकिफ़ है ही, पस अगर तुम भी उनको ईमानदार समझो तो उन्ही काफ़िरों के पास वापस न फेरो न ये औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वह कुफ़ार उन औरतों के लिए हलाल हैं और उन कुफ़ार ने जो कुछ (उन औरतों के मेहर में) खर्च किया हो उनको दे दो, और जब उनका महर उन्हें दे दिया करो तो इसका तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि तुम उससे निकाह कर लो और काफिर औरतों की आबरू (जो तुम्हारी बीवियाँ हों) अपने कब्जे में न रखो (छोड़ दो कि कुफ़ार से जा मिलें) और तुमने जो कुछ (उन पर) खर्च किया हो (कुफ़ार से) लो, और उन्होने भी जो कुछ खर्च किया हो तुम से माँग लें यही खुदा का हुक्म है जो तुम्हारे दरमियान सादिर करता है और खुदा वाकिफ़कार हकीम है

وَأِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ ۖ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقِبْتُمْ فَاتُوا ۚ الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ
مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ ۖ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهُ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ ۖ مُؤْمِنُونَ

और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई औरत तुम्हारे हाथ से निकल कर काफ़िरों के पास चली जाए और (खर्च न मिले) और तुम (उन काफ़िरों से लड़ो और लूटो तो (माले गनीमत से) जिनकी औरतें चली गयीं हैं उनको इतना दे दो जितना उनका खर्च हुआ है) और जिस खुदा पर तुम लोग ईमान लाए हो उससे डरते रहो

يَأْتِيهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعُنكَ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا ۖ وَلَا يَسْرِقْنَ
وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ ۖ يَفْتَرِينَهُ ۚ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا
يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ ۚ ۚ فَبَايِعْنَهُنَّ وَأَسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ

(ऐ रसूल) जब तुम्हारे पास ईमानदार औरतें तुमसे इस बात पर बैयत करने आएँ कि वह न किसी को खुदा का शरीक बनाएँगी और न चोरी करेंगी और न जेना करेंगी और न अपनी औलाद को मार डालेंगी और न अपने हाथ पाँव के सामने कोई बोहतान (लड़के का शौहर पर) गढ़ के लाएँगी, और न किसी नेक काम में तुम्हारी नाफरमानी करेंगी तो तुम उनसे बैयत ले लो और खुदा से उनके मगफिरत की दुआ माँगो बेशक बड़ा खुदा बख्शने वाला मेहरबान है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَوَلَّوْا ۚ قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا ۚ مِنْ ءَآخِرَةِ
كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ

ऐ ईमानदारों जिन लोगों पर खुदा ने अपना ग़ज़ब ढाया उनसे दोस्ती न करो (क्योंकि) जिस तरह काफ़िरों को मुर्दों (के दोबारा ज़िन्दा होने) की उम्मीद नहीं उसी तरह आख़िरत से भी ये लोग न उम्मीद हैं

As-Saff

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سَبِّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ

जो चीज़े आसमानों में है और जो चीज़े ज़मीन में हैं (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिकमत वाला है

2

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ

ऐ ईमानदारों तुम ऐसी बातें क्यों कहा करते हो जो किया नहीं करते

3

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا ۚ مَا لَا تَفْعَلُونَ

खुदा के नज़दीक ये ग़ज़ब की बात है कि तुम ऐसी बात कहो जो करो नहीं

4

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ ۚ صَدَقَ ۚ مَا كَانَتْهُمْ بُنِينَ ۚ مَرْصُوصٌ ۚ

खुदा तो उन लोगों से उलफ़त रखता है जो उसकी राह में इस तरह परा बाँध के लड़ते हैं कि गोया वह सीसा पिलाई हुई दीवारें हैं

5

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ ۚ يُقَوْمٍ لِمَ تُوذُونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ ۚ
فَلَمَّا زَاغُوا ۚ أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयों तुम मुझे क्यों अज़ीयत देते हो हालाँकि तुम तो जानते हो कि मैं तुम्हारे पास खुदा का (भेजा हुआ) रसूल हूँ तो जब वह टेढ़े हुए तो खुदा ने भी उनके दिलों को टेढ़ा ही रहने दिया और खुदा बदकार लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

6

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ إِنَّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا ۖ لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا ۖ بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ ۖ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا ۖ هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۖ

और (याद करो) जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा ऐ बनी इसराइल मैं तुम्हारे पास खुदा का भेजा हुआ (आया) हूँ (और जो किताब तौरत मेरे सामने मौजूद है उसकी तसदीक करता हूँ और एक पैग़म्बर जिनका नाम अहमद होगा (और) मेरे बाद आएँगे उनकी खुशखबरी सुनाता हूँ जो जब वह (पैग़म्बर अहमद) उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आया तो कहने लगे ये तो खुला हुआ जादू है

7

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

और जो शरूश इस्लाम की तरफ बुलाया जाए (और) वह कुबूल के बदले उलटा खुदा पर झूठ (तूफान) जोड़े उससे बढ़ कर ज़ालिम और कौन होगा और खुदा ज़ालिम लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

8

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا ۖ نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ ۖ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

ये लोग अपने मुँह से (फूँक मारकर) खुदा के नूर को बुझाना चाहते हैं हालाँकि खुदा अपने नूर को पूरा करके रहेगा अगरचे कुफ़्फ़ार बुरा ही (क्यों न) मानें

9

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ ۖ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ ۖ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ

वह वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा ताकि उसे और तमाम दीनों पर ग़ालिब करे अगरचे मुशरेकीन बुरा ही (क्यों न) माने

10

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تَجْرَةٍ ۖ تُنْجِيكُمْ مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ

ऐ ईमानदारों क्या मैं नहीं ऐसी तिजारत बता दूँ जो तुमको (आख़ेरत के) दर्दनाक अज़ाब से निजात दे

11

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۖ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ ۖ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(वह ये है कि) खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अपने माल व जान से खुदा की राह में जेहाद करो अगर तुम समझो तो यही तुम्हारे हक में बेहतर है

12

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبَةً ۖ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۖ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

(ऐसा करोगे) तो वह भी इसके ऐवज़ में तुम्हारे गुनाह बरख़्त देगा और तुम्हें उन बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और पाकीजा मकानात में (जगह देगा) जो जावेदानी बेहिश्त में हैं यही तो बड़ी कामयाबी है

13

وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ ۖ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ ۖ قَرِيبٌ ۖ وَبَشِيرٌ الْمُؤْمِنِينَ

और एक चीज़ जिसके तुम दिल दादा हो (यानि तुमको) खुदा की तरफ से मदद (मिलेगी और अनक़रीब फतेह (होगी) और (ऐ रसूल) मोमिनीन को खुशख़बरी (इसकी) दे दो

14

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ كُونُوا ۖ أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّ ۖ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ۖ فَأَمَنْتَ طَائِفَةٌ ۖ مِّنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَكَفَرْتَ طَائِفَةٌ ۖ فَأَيُّدْنَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظُهْرِينَ

ऐ ईमानदारों खुदा के मददगार बन जाओ जिस तरह मरियम के बेटे ईसा ने हवारियों से कहा था कि (भला) खुदा की तरफ (बुलाने में) मेरे मददगार कौन लोग हैं तो हवारीन बोल उठे थे कि हम खुदा के अनुसार हैं तो बनी इसराईल में से एक गिरोह (उन पर) ईमान लाया और एक गिरोह काफिर रहा, तो जो लोग ईमान लाए हमने उनको उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद दी तो आखिर वही ग़ालिब रहे

[1]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ
الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं जो (हकीमी) बादशाह पाक ज्ञात ग़ालिब हिक्मत वाला है

[2]

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

वही तो जिसने जाहिलों में उन्हीं में का एक रसूल (मोहम्मद) भेजा जो उनके सामने उसकी आयतें पढ़ते और उनको पाक करते और उनको किताब और अक्ल की बातें सिखाते हैं अगरचे इसके पहले तो ये लोग सरीही गुमराही में (पड़े हुए) थे

[3]

وَأَخْرَجَ مِنْهُمْ لِمَا يَلْحَقُوا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

और उनमें से उन लोगों की तरफ़ (भेजा) जो अभी तक उनसे मुलहिक्क नहीं हुए और वह तो ग़ालिब हिक्मत वाला है

[4]

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

खुदा का फज़ल है जिसको चाहता है अता फरमाता है और खुदा तो बड़े फज़ल (व क़रम) का मालिक है

[5]

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ
مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

जिन लोगों (के सरो) पर तौरत लदवायी गयी है उन्होने उस (के बार) को न उठाया उनकी मिसाल गधे की सी है जिस पर बड़ी बड़ी किताबें लदी हों जिन लोगों ने खुदा की आयतों को झुठलाया उनकी भी क्या बुरी मिसाल है और खुदा ज़ालिम लोगों को मंज़िल मकसूद तक नहीं पहुँचाया करता

6

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا۟ ۖ إِن زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْا۟ ۖ الْمَوْتَ ۖ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ यहूदियों अगर तुम ये ख्याल करते हो कि तुम ही खुदा के दोस्त हो और लोग नहीं तो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो मौत की तमन्ना करो

7

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُۥ ۖ أَبَدًا ۖ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيهِمْ ۖ وَاللّٰهُ عَلِيمٌۢ بِالظَّالِمِينَ

और ये लोग उन आमाल के सबब जो ये पहले कर चुके हैं कभी उसकी आरजू न करेंगे और खुदा तो ज़ालिमों को जानता है

8

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُۥ ۖ مُلْقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ ۖ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मौत जिससे तुम लोग भागते हो वह तो ज़रूर तुम्हारे सामने आएगी फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले (खुदा) की तरफ लौटा दिए जाओगे फिर जो कुछ भी तुम करते थे वह तुम्हें बता देगा

9

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ۖ إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِن يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا۟ ۖ إِلَىٰ ذِكْرِ اللّٰهِ ۖ وَذَرُوا۟ ۖ الْبَيْعَ ۖ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌۭ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

ऐ ईमानदारों जब जुमा का दिन नमाज़ (जुमा) के लिए अज़ान दी जाए तो खुदा की याद (नमाज़) की तरफ दौड़ पड़ो और (खरीद) व फरोख्त छोड़ दो अगर तुम समझते हो तो यही तुम्हारे हक में बेहतर है

10

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا۟ ۖ فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا۟ ۖ مِن فَضْلِ اللّٰهِ ۖ وَاذْكُرُوا۟ ۖ اللّٰهَ كَثِيرًا ۖ لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में (जहाँ चाहो) जाओ और खुदा के फज़ल (अपनी रोज़ी) की तलाश करो और खुदा को बहुत याद करते रहो ताकि तुम दिली मुरादें पाओ

وَإِذَا رَأَوْا تِجْرَةً أَوْ لَهْوًا أَنْفَضُوا ۖ إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا ۖ قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ ۖ مِّنَ اللَّهِو وَمِنَ التِّجْرَةِ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

और (उनकी हालत तो ये है कि) जब ये लोग सौदा बिकता या तमाशा होता देखें तो उसकी तरफ दूट पड़े और तुमको खड़ा हुआ छोड़ दें (ऐ रसूल) तुम कह दो कि जो चीज़ खुदा के यहाँ है वह तमाशे और सौदे से कहीं बेहतर है और खुदा सबसे बेहतर रिजक देने वाला है

Al-Munaafiqoon

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا ۖ نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَكَاذِبُونَ

(ऐ रसूल) जब तुम्हारे पास मुनाफिकीन आते हैं तो कहते हैं कि हम तो इक़रार करते हैं कि आप यक़नीन खुदा के रसूल हैं और खुदा भी जानता है तुम यक़ीनी उसके रसूल हो मगर खुदा ज़ाहिर किए देता है कि ये लोग अपने (एतकाद के लिहाज़ से) ज़रूर झूठे हैं

2

اتَّخَذُوا ۖ أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً ۖ فَصَدُّوا ۖ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

इन लोगों ने अपनी क़समों को सिपर बना रखा है तो (इसी के ज़रिए से) लोगों को खुदा की राह से रोकते हैं बेशक ये लोग जो काम करते हैं बुरे हैं

3

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ ءَامَنُوا ۖ ثُمَّ كَفَرُوا ۖ فَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ

इस सबब से कि (ज़ाहिर में) ईमान लाए फिर काफ़िर हो गए, तो उनके दिलों पर (गोया) मोहर लगा दी गयी है तो अब ये समझते ही नहीं

4

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۚ وَإِنْ يَقُولُوا ۚ تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۚ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ ۚ
 مُسْنَدَةٌ ۚ ۚ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَتَلَهُمُ اللَّهُ ۚ أَنَّى
 يُؤْفَكُونَ

और जब तुम उनको देखोगे तो तनासुबे आज्ञा की वजह से उनका क्रद व कामत तुम्हें बहुत अच्छा मालूम होगा और गुप्तगू करेंगे तो ऐसी कि तुम तबज्जो से सुनो (मगर अक्ल से खाली) गोया दीवारों से लगायी हुयीं बेकार लकड़ियाँ हैं हर चीख की आवाज़ को समझते हैं कि उन्हीं पर आ पड़ी ये लोग तुम्हारे दुश्मन हैं तुम उनसे बचे रहो खुदा इन्हें मार डाले ये कहाँ बहके फिरते हैं

5

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا ۚ يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا ۚ رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ
 وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ

और जब उनसे कहा जाता है कि आओ रसूलअल्लाह तुम्हारे वास्ते मग़फ़ेरत की दुआ करें तो वह लोग अपने सर फेर लेते हैं और तुम उनको देखोगे कि तकब्बुर करते हुए मुँह फेर लेते हैं

6

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
 الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

तो तुम उनकी मग़फ़ेरत की दुआ माँगो या न माँगो उनके हक़ में बराबर है (क्यों कि) खुदा तो उन्हें हरगिज़ बख्शेगा नहीं खुदा तो हरगिज़ बदकारों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

7

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا ۚ عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُّوا ۚ ۚ وَلِلَّهِ
 خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ

ये वही लोग तो हैं जो (अन्सार से) कहते हैं कि जो (मुहाजिरीन) रसूले खुदा के पास रहते हैं उन पर खर्च न करो यहाँ तक कि ये लोग खुद तितर बितर हो जाएँ हालाँकि सारे आसमान और ज़मीन के खज़ाने खुदा ही के पास हैं मगर मुनाफ़ेकीन नहीं समझते

يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ ۚ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ

ये लोग तो कहते हैं कि अगर हम लौट कर मदीने पहुँचे तो इज्जदार लोग (खुद) ज़लील (रसूल) को ज़रूर निकाल बाहर कर देंगे हालाँकि इज्जत तो खास खुदा और उसके रसूल और मोमिनीन के लिए है मगर मुनाफ़ेकीन नहीं जानते

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ

ऐ ईमानदारों तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुमको खुदा की याद से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करेगा तो वही लोग घाटे में रहेंगे

وَأَنْفِقُوا ۚ مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ ۚ قَرِيبٍ ۚ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ الصَّٰلِحِينَ

और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से क़बूल इसके (खुदा की राह में) खर्च कर डालो कि तुममें से किसी की मौत आ जाए तो (इसकी नौबत न आए कि) कहने लगे कि परवरदिगार तूने मुझे थोड़ी सी मोहलत और क्यों न दी ताकि ख़ैरात करता और नेकीकारों से हो जाता

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ

और जब किसी की मौत आ जाती है तो खुदा उसको हरगिज़ मोहलत नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे ख़बरदार है

At-Taghaabun

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) खुदा ही की तस्बीह करती है उसी की बादशाहत है और तारीफ़ उसी के लिए सज़ावार है और वही हर चीज़ पर कादिर है

2

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ ۖ وَمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

वही तो है जिसने तुम लोगों को पैदा किया कोई तुममें काफ़िर है और कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो खुदा उसको देख रहा है

3

خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ

उसी ने सारे आसमान व ज़मीन को हिक्मत व मसलेहत से पैदा किया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायीं तो सबसे अच्छी सूरतें बनायीं और उसी की तरफ लौटकर जाना है

4

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

जो कुछ सारे आसमान व ज़मीन में है वह (सब) जानता है और जो कुछ तुम छुपा कर या खुल्लम खुल्ला करते हो उससे (भी) वाकिफ़ है और खुदा तो दिल के भेद तक से आगाह है

5

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوا ۖ وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ

क्या तुम्हें उनकी खबर नहीं पहुँची जिन्होंने (तुम से) पहले कुफ़र किया तो उन्होंने अपने काम की सज़ा का (दुनिया में) मज़ा चखा और (आखिरत में तो) उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

6

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ ۖ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا ۖ أَبَشَرٌ ۖ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا ۖ

وَتَوَلَّوْا ۖ ۚ وَأَسْتَغْنَى اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۖ

ये इस वजह से कि उनके पास पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौज़िज़े लेकर आ चुके थे तो कहने लगे कि क्या आदमी हमारे हादी बनेंगे गरज़ ये लोग काफ़िर हो बैठे और मुँह फेर बैठे और खुदा ने भी (उनकी) परवाह न की और खुदा तो बे परवा सज़ावारे हम्द है

7

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ أَن لَّنْ يُبْعَثُوا ۚ ۝ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبُّونَ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

काफ़ि़रों का ख्याल ये है कि ये लोग दोबारा न उठाए जाएँगे (ऐ रसूल) तुम कह दो वहाँ अपने परवरदिगार की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर जो जो काम तुम करते रहे वह तुम्हें बता देगा और ये तो खुदा पर आसान है

8

فَأْمِنُوا ۚ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

तो तुम खुदा और उसके रसूल पर उसी नूर पर ईमान लाओ जिसको हमने नाज़िल किया है और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे ख़बरदार है

9

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۚ وَمَن يُؤْمِن ۚ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا ۖ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ ۚ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ ۝ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

जब वह क़यामत के दिन तुम सबको जमा करेगा फिर यही हार जीत का दिन होगा और जो शरूख़ खुदा पर ईमान लाए और अच्छा काम करे वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसको (बेहिश्त में) उन बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं वह उनमें अबादुल आबाद हमेशा रहेगा, यही तो बड़ी कामयाबी है

10

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

और जो लोग काफ़िर हैं और हमारी आयतों को झुठलाते रहे यही लोग जहन्नुमी हैं कि हमेशा उसी में रहेंगे और वह क्या बुरा ठिकाना है

11

مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَمَن يُؤْمِن ۚ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ ۝ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

जब कोई मुसीबत आती है तो खुदा के इज़न से और जो शरूख़ खुदा पर ईमान लाता है तो खुदा उसके क़ल्ब की हिदायत करता है और खुदा हर चीज़ से खूब आगाह है

12

وَأَطِيعُوا ۖ اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ

और खुदा की इताअत करो और रसूल की इताअत करो फिर अगर तुमने मुँह फेरा तो हमारे रसूल पर सिर्फ पैग़ाम का वाज़ेए करके पहुँचा देना फर्ज़ है

13

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

खुदा (वह है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मोमिनो को खुदा ही पर भरोसा करना चाहिए

14

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا ۚ لَكُمْ فَأَحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعَفَّوْا ۚ وَتَصَفَحُوا ۚ وَتَغْفِرُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ

ऐ ईमानदारों तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बाज़ तुम्हारे दुश्मन हैं तो तुम उनसे बचे रहो और अगर तुम माफ कर दो दरगुज़र करो और बख़्श दो तो खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

15

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ ۚ أَجْرٌ عَظِيمٌ

तुम्हारे माल और तुम्हारी औलादे बस आजमाइश है और खुदा के यहाँ तो बड़ा अज़्र (मौजूद) है

16

فَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ مَا أَسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمَعُوا ۚ وَأَطِيعُوا ۚ وَأَنْفِقُوا ۚ خَيْرٌ ۚ لَّأَنْفُسِكُمْ ۚ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ ۚ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

तो जहाँ तक तुम से हो सके खुदा से डरते रहो और (उसके एहकाम) सुनो और मानों और अपनी बेहतरी के वास्ते (उसकी राह में) खर्च करो और जो शख़्श अपने नफ्स की हिरस से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग मुरादें पाने वाले हैं

17

إِنْ تُقْرِضُوا ۚ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ يُّضَاعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ

अगर तुम खुदा को कर्जे हसना दोगे तो वह उसको तुम्हारे वास्ते दूना कर देगा और तुमको बख़्श देगा और खुदा तो बड़ा कद्रदान व बुर्दबार है

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला ग़ालिब हिकमत वाला है

At-Talaaq

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ
وَأَحْصُوا ۚ الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تَخْرِجُوهُنَّ مِنْ ۚ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ
إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَحِشَةٍ ۚ مُبَيَّنَةٍ ۚ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ ۚ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ۚ ۱

ऐ रसूल (मुसलमानों से कह दो) जब तुम अपनी बीवियों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत (पाकी) के वक्त तलाक़ दो और इद्दा का
शुमार रखो और अपने परवरदिगार खुदा से डरो और (इद्दे के अन्दर) उनके घर से उन्हें न निकालो और वह खुद भी घर से न
निकलें मगर जब वह कोई सरीही बेहयाई का काम कर बैठें (तो निकाल देने में मुज़ायका नहीं) और ये खुदा की (मुकर्रर की हुई)
हदें हैं और जो खुदा की हदों से तजाउज़ करेगा तो उसने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया तो तू नहीं जानता यायद खुदा उसके
बाद कोई बात पैदा करे (जिससे मर्द पछताए और मेल हो जाए)

2

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَأَشْهَدُوا ۚ ذَوَىٰ
عَدْلٍ ۚ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا ۚ الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۚ ۚ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ ۚ ۚ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ ۚ مَخْرَجًا ۚ ۱

तो जब ये अपना इद्दा पूरा करने के करीब पहुँचे तो या तुम उन्हें उनवाने शाइस्ता से रोक लो या अच्छी तरह रूखसत ही कर
दो और (तलाक़ के वक्त) अपने लोगों में से दो आदिलों को गवाह करार दे लो और गवाहों तुम खुदा के वास्ते ठीक ठीक
गवाही देना इन बातों से उस शख्स को नसीहत की जाती है जो खुदा और रोजे आखिरत पर ईमान रखता हो और जो खुदा से
डरेगा तो खुदा उसके लिए नजात की सूरत निकाल देगा

3

وَيَرْزُقُهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ ۝۹ إِنَّ اللَّهَ بَلِّغُ أَمْرِهِ ۚ ۝۱۰ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ ۚ ۝۱۱ قَدْرًا ۚ ۝۱۲

और उसको ऐसी जगह से रिज़क देगा जहाँ से वहम भी न हो और जिसने खुदा पर भरोसा किया तो वह उसके लिए काफी है बेशक खुदा अपने काम को पूरा करके रहता है खुदा ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा मुक़रर कर रखा है

4

وَأَلِّ يَسِّنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنْ رَأَيْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةَ أَشْهُرٍ ۚ وَأَلِّ لَمْ يَحِضْنَ ۚ ۝۱۳ وَأُولَ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ ۝۱۴ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ ۚ ۝۱۵ مِنْ أَمْرِهِ ۚ ۝۱۶ يُسْرًا ۚ ۝۱۷

और जो औरतें हैज़ से मायूस हो चुकी अगर तुम को उनके इद्दे में शक़ होवे तो उनका इद्दा तीन महीने है और (अला हाज़िल क़यास) वह औरतें जिनको हैज़ हुआ ही नहीं और हमेला औरतों का इद्दा उनका बच्चा जनना है और जो खुदा से डरता है खुदा उसके काम में सहूलित पैदा करेगा

5

ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ ۚ ۝۱۸ إِلَيْكُمْ ۚ ۝۱۹ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ ۚ ۝۲۰ وَيُعْظِمْ لَهُ ۚ ۝۲१ أَجْرًا

ये खुदा का हुक्म है जो खुदा ने तुम पर नाज़िल किया है और जो खुदा डरता रहेगा तो वह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा दरजा देगा

6

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا ۚ ۝۲२ عَلَيْهِنَّ ۚ ۝۲३ وَإِنْ كُنَّ أُولَ حَمَلٍ ۚ ۝۲४ فَأَنْفِقُوا ۚ ۝۲५ عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ ۝۲६ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ ۝۲७ وَأَتَمِّرُوا ۚ ۝۲८ بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۚ ۝۲९ وَإِنْ تَعَاَسَرْتُمْ فَسْتََرْضِعْ لَهُ ۚ ۝ॳ

أُخْرَى

मुतलक्का औरतों को (इद्दे तक) अपने मक़दूर मुताबिक़ दे रखो जहाँ तुम खुद रहते हो और उनको तंग करने के लिए उनको तकलीफ़ न पहुँचाओ और अगर वह हमेला हो तो बच्चा जनने तक उनका खर्च देते रहो फिर (जनने के बाद) अगर वह बच्चे को तुम्हारी खातिर दूध पिलाए तो उन्हें उनकी (मुनासिब) उजरत दे दो और बाहम सलाहियत से दस्तूर के मुताबिक़ बात चीत करो और अगर तुम बाहम कश म कश करो तो बच्चे को उसके (बाप की) खातिर से कोई और औरत दूध पिला देगी

7

لِيُنْفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يَكْلَفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۚ

गुन्जाइश वाले को अपनी गुन्जाइश के मुताबिक खर्च करना चाहिए और जिसकी रोज़ी तंग हो वह जितना खुदा ने उसे दिया है उसमें से खर्च करे खुदा ने जिसको जितना दिया है बस उसी के मुताबिक तकलीफ़ दिया करता है खुदा अनकरीब ही तंगी के बाद फ़राखी अता करेगा

8

وَكَايِن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ ۚ فَحَاسِبْنَهَا حَسَابًا شَدِيدًا ۚ وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكَرًا ۚ

और बहुत सी बस्तियों (वाले) ने अपने परवरदिगार और उसके रसूलों के हुक्म से सरकशी की तो हमने उनका बड़ी सख्ती से हिसाब लिया और उन्हें बुरे अज़ाब की सज़ा दी

9

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عِقَبُهُ أَمْرًا خُسْرًا

तो उन्होंने अपने काम की सज़ा का मज़ा चख लिया और उनके काम का अन्जाम घाटा ही था

10

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۚ

खुदा ने उनके लिए सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है तो ऐ अक्लमन्दों जो ईमान ला चुके हो खुदा से डरते रहो खुदा ने तुम्हारे पास (अपनी) याद कुरान और अपना रसूल भेज दिया है

رَسُولًا ۖ يَتْلُوا ۚ عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنِ ۚ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا ۚ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ ۚ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ا ۚ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ ۚ رِزْقًا

जो तुम्हारे सामने बाज़े आयें पढ़ता है ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करते रहे उनको (कुफ़र की) तारिकियों से ईमान की रौशनी की तरफ़ निकाल लाए और जो खुदा पर ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करे तो खुदा उसको (बेहिश्त के) उन बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और वह उसमें अबादुल आबाद तक रहेंगे खुदा ने उनको अच्छी अच्छी रोज़ी दी है

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۚ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ ا

खुदा ही तो है जिसने सात आसमान पैदा किए और उन्हीं के बराबर ज़मीन को भी उनमें खुदा का हुक्म नाज़िल होता रहता है - ताकि तुम लोग जान लो कि खुदा हर चीज़ पर कादिर है और बेशक खुदा अपने इल्म से हर चीज़ पर हावी है

At-Tahrim

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِي مَرْضَاتِ أَزْوَاجِكَ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

ऐ रसूल जो चीज़ खुदा ने तुम्हारे लिए हलाल की है तुम उससे अपनी बीवियों की खुशनूदी के लिए क्यों किनारा कशी करो और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ

खुदा ने तुम लोगों के लिए कसमों को तोड़ डालने का कफ़ार मुकर्रर कर दिया है और खुदा ही तुम्हारा कारसाज़ है और वही वाकिफ़कार हिकमत वाला है

وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ ۖ حَدِيثًا ۖ فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ ۖ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ
عَرَفَ بَعْضُهُ ۖ وَأَعْرَضَ عَنْ ۖ بَعْضٍ ۖ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ ۖ قَالَتْ مَنْ أَنَا ۖ بِأَكْ هَذَا ۖ
قَالَ نَبَأَنِي الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ

और जब पैगम्बर ने अपनी बाज़ बीवी (हफ़सा) से चुपके से कोई बात कही फिर जब उसने (बावजूद मुमानियत) उस बात की (आयशा को) ख़बर दे दी और खुदा ने इस अम्र को रसूल पर ज़ाहिर कर दिया तो रसूल ने (आयशा को) बाज़ बात (किस्सा मारिया) जता दी और बाज़ बात (किस्साए यहद) टाल दी गरज़ जब रसूल ने इस वाक़िये (हफ़सा के अफ़शाए राज़) कि उस (आयशा) को ख़बर दी तो हैरत से बोल उठीं आपको इस बात (अफ़शाए राज़) की किसने ख़बर दी रसूल ने कहा मुझे बड़े वाक़िफ़कार ख़बरदार (खुदा) ने बता दिया

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۖ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ
وَجِبْرِيلُ وَصَلِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ

(तो ऐ हफ़सा व आयशा) अगर तुम दोनों (इस हरकत से) तौबा करो तो ख़ैर क्योंकि तुम दोनों के दिल टेढ़े हैं और अगर तुम दोनों रसूल की मुखालेफ़त में एक दूसरे की अयानत करती रहोगी तो कुछ परवा नहीं (क्यों कि) खुदा और ज़िबरील और तमाम ईमानदारों में नेक शरूश उनके मददगार हैं और उनके अलावा कुल फ़रिश्ते मददगार हैं

عَسَىٰ رَبُّهُ ۖ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبَدِّلَهُ ۖ أَزْوَاجًا خَيْرًا ۖ إِنْ كُنَّ مُسْلِمَاتٍ ۖ مُؤْمِنَاتٍ ۖ
قَانِتَاتٍ ۖ تَتَّبِعُنَّ عِبَادَتِي ۖ سَعَيْتُ ۖ تَتَّبِعْتِ ۖ وَأَبْكَارًا ۖ

अगर रसूल तुम लोगों को तलाक़ दे दे तो अनक़रीब ही उनका परवरदिगार तुम्हारे बदले उनको तुमसे अच्छी बीवियाँ अता करे जो फ़रमाबरदार ईमानदार खुदा रसूल की मुतीय (गुनाहों से) तौबा करने वालियाँ इबादत गुज़ार रोज़ा रखने वालियाँ ब्याही हुई

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ قُوا ۖ أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا ۖ وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلَائِكَةٌ غِلَظٌ ۖ شِدَادٌ ۖ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ

और बिन ब्याही कुंवारियाँ हो ऐ ईमानदारों अपने आपको और अपने लड़के बालों को (जहन्नुम की) आग से बचाओ जिसके इंधन आदमी और पत्थर होंगे उन पर वह तन्दखू सख्त मिजाज़ फ़रिश्ते (मुकरर) हैं कि खुदा जिस बात का हुक्म देता है उसकी नाफरमानी नहीं करते और जो हुक्म उन्हें मिलता है उसे बजा लाते हैं

7

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَا تَعْتَذِرُوا ۚ الْيَوْمَ ۚ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

(जब कुफ़रार दोज़ख के सामने आएँगे तो कहा जाएगा) काफ़िरों आज बहाने न ढूँढो जो कुछ तुम करते थे तुम्हें उसकी सज़ा दी जाएगी

8

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ تُوبُوا ۚ إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً ۚ نَّصُوحًا ۚ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ ۚ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ يَوْمَ لَا يُخْزَىٰ اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مَعَهُ ۚ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتِمِّمْ لَنَا نُورَنَا وَآغْفِرْ لَنَا ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

ऐ ईमानदारों खुदा की बारगाह में साफ़ खालिस दिल से तौबा करो तो (उसकी वजह से) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर दे और तुमको (बेहिशत के) उन बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें जारी हैं उस दिन जब खुदा रसूल को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए हैं रूसवा नहीं करेगा (बल्कि) उनका नूर उनके आगे आगे और उनके दाहिने तरफ़ (रौशनी करता) चल रहा होगा और ये लोग ये दुआ करते होंगे परवरदिगार हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर और हमें बख्य दे बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है

9

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ ۖ وَأَغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَا وَلَهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ

ऐ रसूल काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जेहाद करो और उन पर सख्ती करो और उनका ठिकाना जहन्नुम है और वह क्या बुरा ठिकाना है

10

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا ۖ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ امْرَأَتَ نُوحٍ ۚ وَامْرَأَتَ لُوطٍ ۚ ۚ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحِينَ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ

खुदा ने काफ़िरों (की इबरात) के वास्ते नूह की बीवी (वाएला) और लूत की बीवी (वाहेला) की मसल बयान की है कि ये दोनो हमारे बन्दों के तसरूफ़ थीं तो दोनों ने अपने शौहरों से दगा की तो उनके शौहर खुदा के मुकाबले में उनके कुछ भी काम न आए और उनको हुक्म दिया गया कि और जाने वालों के साथ जहन्नुम में तुम दोनों भी दाखिल हो जाओ

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا ۖ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَمْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ
بَيْتًا ۚ فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنَ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ ۚ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

और खुदा ने मोमिनीन (की तसल्ली) के लिए फिरऔन की बीवी (आसिया) की मिसाल बयान फ़रमायी है कि जब उसने दुआ की परवरदिगार मेरे लिए अपने यहाँ बेहिश्त में एक घर बना और मुझे फिरऔन और उसकी कारस्तानी से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगो (के हाथ) से छुटकारा अता फ़रमा

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ
رَبِّهَا وَكُتِبَ فِيهَا ۖ وَكَانَتْ مِنَ الْمُقْنِينَ

और (दूसरी मिसाल) इमरान की बेटी मरियम जिसने अपनी शर्मगाह को महफूज़ रखा तो हमने उसमें रूह फूंक दी और उसने अपने परवरदिगार की बातों और उसकी किताबों की तस्दीक की और फरमाबरदारों में थी